अब्राह्मण ग्रंथ

बौद्ध ग्रंथ

① त्रीपिटक > सबसे प्राचीन बौद्ध ग्रंथ त्रीपिटक है जो पाली भाषा में लिखि गई है महात्मा बुद्ध के निर्वाण के बाद इसकी रचना हुई है त्रीपिटक तीन ग्रंथों से मीलकर बना है जो इस प्रकार है — (A) सुत्तपिटक > इसमें महात्मा बुद्ध के धार्मिक विचार एवं वचनों का संग्रह है (B) विनय पिटक > विनयपिटक में बौद्ध भिक्षुओं के आचार विचार के बारे में उल्लेख मीलता है अर्थात यह एक आचार संहिता है। (C) अभिधम्म पिटक — यह पुस्तक बौद्धों का दार्शनीक ग्रंथ है।
नोट त्रीपिटक के द्वारा ई०पूर्व से पहले की घटना के बारे में जानकारी मिलती है

जातक

— जातक में महात्मा बुद्ध की पूर्व जन्मों की कथाएं बौद्ध धर्मावलम्बीयों में यह मान्यता है कि बुद्ध के रूप को जन्म लेने के पूर्व बुद्ध 550 जन्मों से गुजर चुके थे अनेक जन्मों में वे पशु पक्षी बने महात्मा बुद्ध की पूर्व जन्मों की कथा लोकवार्ता के रूप में कही गई है। इससे ई०पूर्व पान्चवी शताब्दी से लेकर ईसा के दुसरी शताब्दी तक के प्राचीन भारतीय इतिहास का बोध हो जाता है जातक भी पाली भाषा में लिखी गई है।

द्वीपवंश एवं महावंश

> द्वीपवंश एवं महावंश के द्वारा श्रीलंका के इतिहास का ज्ञान

घ्रता है लेकिन प्रसंग वश प्राचीन भारतीय इतिहास के बारे में भी जानकारी मिल जाती है दीप वंश की रचना चौथी सताब्दी में हुई महावंश की रचना पाचवी सताब्दी में हुई इनकी भाषा भी पाली है।

मिलिन्दपन्हो

V.V.I मिलिन्दपन्हो पुस्तक के रचयीता का नाम नागसेन या नागा अर्जुन है जिसने हिन्दयवन या बैक्ट्रीयायी यूनानी राजा मिनान्डर (165 BC to 145 BC) को बौध धर्म में दिक्षीत कीया था। मिनान्डर की राजधानी "शाकल" (आधुनीक स्यालकोट) थी इस पुस्तक में मिनान्डर नागाअर्जुन से बौद्ध धर्म के सम्बन्ध में बहुत सी बातों को पुछता है और उसका जवाब नागाअर्जुन देता है मिलिन्दपन्हो का अर्थ ही होता है - मिनान्डर का प्रश्न यह पुस्तक भी पाली भाषा में लिखि गई है

नोट बौध धर्म के सम्मलित रूप से "निकाय" कहा जाता है

नोट अंगुतर निकाय में छठी सताब्दी ईसा पुर्व के सोलह जनम पदों की चर्चा सर्व प्रथम मिलती है।

जैन ग्रंथ

जैन ग्रंथ की भाषा मूलतः प्राकृत रही है। बाद में चलकर इसके लिए संस्कृत का प्रयोग होने लगा जैन ग्रंथों को सम्मलित रूप में "आगम" कहा जाता है।

नोट - सबसे प्राचीन जैन ग्रंथ "बारह अंग" है।

प्रमुख जैन ग्रंथ है — (1) आचरांगसुत्र -

इस ग्रंथ में जैन भिक्षुओं के आचार का

बताते हैं लेकिन प्रसंग वश प्राचीन भारतीय इतिहास के बारे में भी जानकारी मिल जाती है दीपवंश की रचना चौथी शताब्दी में हुई महावंश की रचना पाचवीं शताब्दी में हुई इनकी भाषा भी पाली है।

मिलिन्दपन्हो

V.V.I. मिलिन्दपन्हो पुस्तक के रचयीता का नाम नागसेन या नागअर्जुन है जिसने हिन्दयवन या बैक्ट्रीयायी यूनानी राजा मिनान्डर (165 BC to 145 BC) को बौद्ध धर्म में दिक्षीत कीया था। मिनान्डर की राजधानी "शाकल" (आधुनीक स्यालकोट) थी इस पुस्तक में मिनान्डर नागअर्जुन से बौद्ध धर्म के सम्बन्ध में बहुत सी बातों को पुछता है और उसका जबाब नागअर्जुन देता है मिलिन्दपन्हो का अर्थ ही होता है - मिनान्डर का प्रश्न यह पुस्तक भी पाली भाषा में लिखि गई है

नोट बौद्ध धर्म का सम्मलित रूप से "निकाय" कहा जाता है

नोट अंगुतर निकाय में छठी सताब्दी ईसा पूर्व के सोलहो जनपदों की चर्चा सर्वप्रथम मिलती है।

जैन ग्रंथ

जैन ग्रंथ की भाषा मूलतः प्राकृत रही है। बाद में चलकर इसके लिए संस्कृत का प्रयोग होने लगा जैन ग्रंथों को सम्मलित रूप में "आगम" कहा जाता है।

नोट - सबसे प्राचीन जैन ग्रंथ "बारह अंग" है।

प्रमुख जैन ग्रंथ है — (1) आचरांगसुत्त -

इस ग्रंथ में जैन भिक्षुओ के आचार का

उल्लेख है

(ii) **भगवती सूत्र** इसके द्वारा महावीर के जीवन पर कुछ प्रकाश पड़ता है।

(iii) **नायाधम्म कहा** ⇒ इसमें महावीर के धार्मिक विचार एवं वचनों का संग्रह है।

Scanned by TapScanner

अधार्मिक ग्रंथ या लौकिक ग्रंथ

(i) अष्टाध्यायी → इसके रचयिता पाणिनी है यह पुस्तक भारत की प्रथम व्याकरण की पुस्तक है। इस पुस्तक के द्वारा महावीर, गौतम बुद्ध, से लेकर मौर्य काल तक की घटना की जानकारी मिलती है।

(ii) मुद्राराक्षस - इस पुस्तक के रचयिता (विशाख दत्त है इस पुस्तक के द्वारा मौर्य काल के इतिहास के बारे मे जानकारी मीलती है।

(iii) अर्थशास्त्र → यह पुस्तक चाणक्य, या विष्णुगुप्त या कौटिल्य के द्वारा लिखि गई है। इस पुस्तक के द्वारा मौर्य काल के इतिहास पर यथेष्ट प्रकाश पड़ता है

(iv) महाभाष्य — पँतजली
(v) मालविकाग्निमित्रम् — कालीदास
दोनो पुस्तको के बारे मे शुंग वंश के बारे मे जानकारी मीलती है

(vi) — (i) वृहत्कथामंजरी - क्षेमेन्द्र
(ii) कथासरितसागर — सोमदेव
(iii) रघुवंशम् — कालीदास
(iv) अभिज्ञान शाकुन्तलम — कालीदास

उपर्युक्त चारो पुस्तको से गुप्त कालके इतिहास के बारे मे जानकारी मीलती है

(vii) गुप्तकाल के बाद इतिहास के जानकारी के लिए मुख्यतः राज कवियो पर निर्भर होना पड़ता है इन कवियों ने अपने संरक्षक राजाओं के वर्णन को काफी बढ़ा चढ़ाकर

Scanned by TapScanner

लिखा है और इसे निरपेक्ष इतिहास के बारे में जानकारी नही मील पाती है। इस प्रकार की कुछ पुस्तको के नाम है - (i) हर्ष चरितम — वाणभट्ट - इस पुस्तक के द्वारा हर्षवर्धन के काल के बारे में जानकारी मीलती है (ii) विक्रमादेव चरित > बिल्हण इस पुस्तक से कल्याणी के चालुक्य राजा विक्रमादेव के बारे में जानकारी मीलती है।

(iii) रामचरीत - संध्याकरनन्दी > इस पुस्तक से बंगाल के पाल राजा रामपाल के बारे में जानकारी मीलती है।

(iv) पृथ्वी राज विजय > जयानक —

(v) पृथ्वीराज रासो - चन्दबरदायी >

इन दोनो पुस्तको से दिल्ली एव अजमेर के राजा पृथ्वीराज चौहान या पृथ्वी राज तृतीय के बारे में जानकारी मीलती है।

B विदेशी विवरण

भारत आदिकाल से विदेशीयों के सम्बन्धित रहा है विदेशी भारत मे आये और बहुत से विवरण लिख छोड़े है। जिसके तत्कालीन भारतीय इतिहास पर यथेष्ट प्रकाश पड़ता है। विदेशी विवरण को हम तीन खण्डो मे विभाजित कर सकते है।

(A) युनानी लेखको का विवरण
(B) चीनी लेखको का विवरण (तिब्बतीयो का)
(C) अरब लेखको या मुसलमानो का विवरण

युनानी लेखको का विवरण

① युनानी इतिहासकार (हेरोडोटस) (जिसे विश्व इतिहास का पिता कहा जाता है) ने अपनी पुस्तक Historica मे लिखा है कि फारस के सेनापति "स्काईलैब" (जो युनानी था) को फारस के शासक ने सिन्धु क्षेत्र मे भारत सम्बन्धि विषयों पर जानकारी के लिये भारत भेजा था अत! हम कह सकते है कि हेरोडोटस के पुस्तक मे भी भारत सम्बन्धि विषयों का विवरण है।

(i) नोट ⇒ हेरोडोटस के बाद एक अन्य युनानी इतिहासकार (टेसियस) ने भी अपनी पुस्तक मे भारत की चर्चा की है

(ii) नोट टेसियस ईरान का राजवैद्य था।

युनानी आक्रमणकारी सिकन्दर 326 BC मे भारत पर आक्रमण किया। सिकन्दर पश्चिमोत्तर भारत मे लगभग 19 महिने तक रहा और लगातार युध्दो मे व्यस्त रहा।

Scanned by TapScanner

सिकन्दर के साथ अनेक इतिहासकार, भूगोलवेत्ता एवं राजनीतिज्ञ भारत आये थे जैसे- नियारकस, ओनीसिक्रीटस, एरिस्टोबुलस, इत्यादि ये विद्वान भारत के सम्बन्ध में मूल्यवान इतिहास लिख छोड़े हैं जिससे तत्कालीन भारत के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक विषयों के बारे में भरपूर जानकारी मिलती है।
नोट सिकन्दर के आक्रमण के पश्चात ही भारत का तिथिक्रम इतिहास लिखना प्रारम्भ हुआ

322 BC में मौर्य वंश की नींव तक्षशिला के प्राचार्य कौटिल्य के सहायता से चन्द्रगुप्त मौर्य ने डाली जिसकी राजधानी पाटलीपुत्र थी
323 BC में सिकन्दर के मृत्यु के पश्चात बेबिलोनिया का शासक सेल्युकस बना उसने सिकन्दर के सपने को साकार करने का निर्णय लिया और भारत विजय की योजना बनायी फलतः सेल्युकस और चन्द्रगुप्त मौर्य के बीच में 305 BC में एक युद्ध हुआ तथा सेल्युकस को पराजय की मुँह देखनी पड़ी साथ ही साथ एक सन्धि करनी पड़ी सन्धि के बाद पश्चिमोत्तर भारत के एक भाग को दे दिया और अपनी एक पुत्री हेलेना का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य किया यह भारत का पहला अन्तर्राष्ट्रीय विवाह माना जाता है।
राजनीतिक सम्पर्क और प्रगाढ़ करने के लिए सेल्युकस का राजदूत मेगास्थनीज चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार पाटलीपुत्र के उपस्थित हुआ। मेगास्थनीज बहुत दिनों तक मौर्यों की राजधानी पाटलीपुत्र में रहा उसने मौर्य काल के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण लिख छोड़े हैं उसकी पुस्तक का नाम

44\ 'इन्डीका' है और यह पुस्तक ग्रीक भाषा में लिखि गई है।

पेरीपलस ऑफ एरिथ्रियनसी

यह पुस्तक 80 ई० में एक यूनानी यात्री के द्वारा लिखि गई थी जिसने भारत की यात्रा की थी लेकिन इस पुस्तक के लेखक का नाम अज्ञात है। इस पुस्तक में भारतीय बन्दरगाहों का विवरण मीलता है साथ ही साथ भारत से आयात निर्यात की जाने वाली वस्तुओं का भी वर्णन मीलता है।

ज्योग्राफी

इस पुस्तक के लेखक का नाम टॉलमी है इसमे इन्जन के दुसरी सदी के भारत के बारे मे भौगोलीक विवरण मीलता है टॉलेमी रोम का रहने वाला था।

नेचुरल हिस्टोरिका → इस पुस्तक के रचयीता प्लीनी है यह पुस्तक लैटीन भाषा में है इस पुस्तक में यह विवरण मीलता है पहली सदी में भारत और ईटली के बीच कैसा व्यापारीक सम्बन्ध था।

चीनी यात्रीयो का विवरण → प्राचीन भारतीय इतिहास के पुर्ननिर्माण मे चीनी यात्रीयों के विवरण भी विशेष उपयोगी रहे है ये चीनी यात्री बौध मतानुयायी थे तथा भारत में बौध तिर्थ स्थलों की यात्रा एवम बौध धर्म के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए आये थे इनमे चार के नाम विशेष रूप से प्रसिद्ध है—— फाहियान, सुंगयुन

ह्वेनसांग or ह्वेनसांग या युवानच्वांग और इत्सिंग इनका विवरण इस प्रकार है।

(i) फाहियान → फाहियान चन्द्रगुप्त द्वितीय या चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (380 से 412 ई० में) के शासन काल में भारत आया वह (399 ई० से 414 ई० तक) भारत में रहा और भारत के विषय में मूल्यवान विवरण लिख छोड़े हैं।

(ii) सुगयुन → सुगयुन (518 ई० में भारत आया और उसने अपने तीन वर्ष की यात्रा में बौध ग्रंथों की प्रतियां एकत्रीत की

(iii) ह्वेनसांग → ह्वेनसांग हर्षवर्धन (606 ई० से 647 ई०) के शासन काल में भारत आया था वह 629 ई० में भारत पहुँचा और 645 ई० में भारत से लौटा वह बहुत दिनों तक नालंदा विश्वविद्यालय में रहा सभी

★ नोट (i) सभी चीनी यात्री में ह्वेनसांग सर्वाधिक महत्वपूर्ण है जिसे "यात्रियों का राजकुमार" कहा जाता है।

नोट (ii) ह्वेनसांग अपने यात्रा भ्रमण वृतांत अपनी पुस्तक "सि-यु-की" में लिखे हैं जिसमें 138 देशों का विवरण मिलता है।

नोट (iii) ह्वेनसांग के एक मित्र ह्वीली ने "ह्वेनसांग की जीवनी" (Life of the ~~Huensang~~ Hiuntsang) लिखी है जिसके द्वारा हर्ष कालीन भारत की दशा का ज्ञान प्राप्त होता है।

(iv) इत्सिंग → इत्सिंग 673 ई० में भारत आया तथा 686 ई० में भारत से लौटा था। इत्सिंग का विहार दौरा 673 ई० में हुआ था

नोट अन्य चीनी यात्रियों में भारवालू लीन्-स्कम चाअनुकुआ का स्थान महत्वपूर्ण है

गत्वान लिन के विवरण से हर्ष के पुर्वी अभीयान के विषय में जानकारी मीलती है। जबकी च्वाङ्-यु-कुआ के विवरण से दक्षीण भारत के चोल साम्राज्य के बारे में जानकारी मीलती हैं। नोट- चीन के इतिहास के पिता सुमा चीन है और इनकी पुस्तक में भारत के सम्बन्ध में विवरण मिलता है

2 तिब्बती लेखको का विवरण ->

(i) लामातारनाथ -> वह 11वी 12वी सताब्दी में भारत का दौरा किया था। उसके ग्रंथ कंग्युर एवम तंग्युर के द्वारा भारत सम्बन्धि बहुत सी जानकारी प्राप्त होती है

(ii) धर्मा स्वामी -> वह तेरहवी सताब्दी में भारत आया था और इसके विवरणो से भी बहुत सी जानकारी प्राप्त होती है।

(3) मुसलमान यात्रियों का विवरण ->

(i) भारत पर प्रथम मुस्लिम मुहम्मद बिन कासीम के नेतृत्व में 712 ई० में हुआ था। इसके बाद मुस्लिम आक्रमण जारी रहा और बहुत से मुस्लिम व्यापारी एव यात्री एव विद्वान भारत के यात्रा पर आये।

(ii) सुलेमान -> आठवी सदी में भारत आया था और इसने प्रतिहार एवम पाल शासको के बारे में विस्तृत विवरण लिख छोड़ा है।

(iii) अबु-रि-हान या अलबरूनी — अलबरूनी महमुद गजनवी का दरबारी इतिहासकार था। गजनवी के आक्रमण के समय वह भारत का दौरा किया था भारत के विषय में वह अपनी पुस्तक तहकीक-ए-हिन्द या कित्ताबु-हिन्द

Scanned by TapScanner

मे चर्चा की है।

नोट सम्पुर्ण मानव जीवन के इतिहास का मात्र
0.1% का इतिहास ही लिखित है।

Scanned by TapScanner